भट्टारक श्रुतसागरसूरि

जीवन-परिचय : श्रुतसागरसूरि अपने संघ के अच्छे प्रतिभाशाली विद्वान और ग्रन्थकार थे। इनका व्यक्तित्व एक ज्ञानाराधक का व्यक्तित्व है, जिनका एक-एक क्षण श्रुतदेव की उपासना में व्यतीत हुआ है।

इनके गुरु का नाम विद्यानन्दि और गुरुभाई का नाम मल्लिभूषण था। मल्लिभूषण के अनुरोध पर ही इन्होंने कई ग्रन्थों की रचना की है।

श्रुतसागरसूरि ने अपने को देशव्रती, ब्रह्मचारी या वर्णी लिखा है तथा अनेक विशेषणों से स्वयं को अलंकृत किया है।

भट्टारक श्रुतसागरसूरि का समय विक्रम की 16वीं शताब्दी है।

रचना-परिचय : श्रुतसागरसूरि की अब तक 38 रचनाएँ प्राप्त हैं। इनमें आठ टीका ग्रन्थ हैं और चौबीस कथा ग्रन्थ हैं, शेष छह व्याकरण और काव्य ग्रन्थ हैं।

1. यशस्तिलकचन्द्रिका, 2. तत्त्वार्थवृत्ति, 3. तत्त्वत्रयप्रकाशिका, 4. जिनसहस्रनामटीका, 5. महाभिषेकटीका, 6. षट्पाहुडटीका, 7. सिद्धभक्तिटीका, 8. सिद्धचक्राष्टकटीका, 9. ज्येष्ठजिनवरकथा, 10. रविव्रतकथा, 11. सप्तपरमस्थानकथा, 12. मुकुटसप्तमी कथा, 13. अक्षयनिधिकथा, 14. षोडसकारणकथा, 15. मेघमालाव्रतकथा, 16. चन्दनषष्ठीकथा, 17. लब्धिविधानकथा, 18. पुरन्दरविधानकथा, 19. दशलाक्षणीव्रतकथा, 20. पुष्पाञ्जलिव्रतकथा, 21. आकाशपंचमीव्रतकथा, 22. मुक्तावलीव्रतकथा, 23. निर्दुःखसप्तमीव्रतकथा, 24. सुगन्धदशमी कथा, 25. श्रावणद्वादशीकथा, 26. रत्नत्रयव्रतकथा, 27. अशोकरोहिणीकथा, 28. तपोलक्षणपंक्तिकथा, 29. सिद्धभक्तिटीका, 30. मेरुपंक्तिकथा, 31. विमानपंक्तिकथा, 32. पल्लिविधानकथा 33. श्रीपालचरित 34. यशोधरचरित, 35. औदार्यचिन्तामणी, 36. श्रुतस्कन्धपूजा, 37. पार्श्वनाथस्तवन, 38. शान्तिनाथस्तवन।